विचार व स्मृति का भव्य स्मारक:– भारतीय राजनीति में तपस्वी की तरह रहकर एकात्म मानव दर्शन का विचार तथा विकास की दृष्टि से अंत्योदय का मंत्र देने वाले मनीषी थे पंडित दीनदयाल जी। उनकी प्रेरणा थी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, उनका भव्य स्मारक बनाकर विचार एवं स्मृति को सुरक्षित रखने हेतु सभी को बधाई।

–रामलाल – संगठन महामंत्री, भाजपा

पवित्र स्थान :– ऊर्जा–विचार–दर्शन का प्रसारण करने वाला पवित्र स्थान।

भय्या जोशी– डॉ. हेडगेवार भवन, नागपुर
दिनांक 25 जुलाई, 2019

आप से निवेदन है कि आप मनसा वाचा कर्मणा सकारात्मक सहयोग व मार्गदर्शन प्रदान करावें एवं ईष्ट मित्रों, परिवारजनों सहित धानक्या स्मारक पधारकर दीनदयाल जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करें।

धानक्या कैसे पहुँचे – पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक, धानक्या रेलवे स्टेशन पर स्थित है। यह जयपुर से लगभग 25 किमी है। जयपुर से सिरसी रोड होते हुए सिंवार मोड़ से सिंवार गांव होते हुए स्मारक पर पहुँचा जा सकता है एवं अजमेर रोड से भी ठीकरिया, बड़ के बालाजी के पास से धानक्या रेलवे स्टेशन पर पहुँच सकते हैं।

सम्पर्क : **पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति**
सेवा सदन, सहकार मार्ग, सहकार लेन, लालकोठी योजना, जयपुर–302015
अणुडाक : deendayalupadhyaysmriti@gmail.com
वेबस्थल : www.deendayalupadhyaysmriti.org
फेसबुक : deendayalupadhyaysmriti
मोबाइल : 9425018651, 9983622222, 9414053250, 9829970082

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय को जानो

पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक, धानक्या, जयपुर

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के नाना श्री चुन्नीलाल जी का धानक्या रेलवे स्टेशन क्वार्टर

पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तित्व एवं कृतित्व

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वह सामान्य व्यक्ति, सक्रिय कार्यकर्ता, कुशल संगठक, प्रभावी नेता एवं मौलिक विचारक थे। वे साथ ही समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, राजनीति विज्ञानी एवं दार्शनिक भी थे।

उनके पिता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय व माता का नाम रामप्यारी था। पं. दीनदयाल जी के पिता रेलवे में जलेसर रोड स्टेशन पर सहायक स्टेशन मास्टर थे। पंडित दीनदयाल जी के छोटे भाई का नाम शिवदयाल था। उस समय उनके नाना चुन्नीलाल शुक्ल धानक्या, जयपुर में स्टेशन मास्टर थे। पंडित दीनदयाल जी का जन्म 25 सितम्बर 1916 को हुआ था। दीनदयाल जी की माता श्रीमती रामप्यारी जी का अधिकांश समय अपने पिता चुन्नीलाल जी के पास रहना होता था। दीनदयाल जी का शिशु काल अपने नाना चुन्नीलाल जी के धानक्या रेलवे स्टेशन के क्वार्टर में व्यतीत हुआ। यहीं उनके शिशुकाल की संस्कार सृष्टि पल्लवित हुई। पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ने चलना, फिरना व बोलना धानक्या में अपने नानाजी के रेलवे क्वार्टर में ही सीखा। दीनदयाल जी ने अक्षरज्ञान व प्रारम्भिक शिक्षा अपने नाना चुन्नीलाल जी से धानक्या के रेलवे क्वार्टर में प्राप्त की। दीनदयाल जी जब 3 वर्ष के थे, तब उनके पिता का देहांत हो गया। तत्पश्चात माता रामप्यारी जी को क्षय रोग हो गया और 8 अगस्त 1924 को उनका भी देहावसान हो गया। दीनदयाल जी धानक्या के रेलवे क्वार्टर में उनके नाना चुन्नीलाल जी के 1924 में सेवानिवृत्त होने तक रहे। तत्पश्चात वे मामा श्री राधारमण जी के साथ रहने लगे। दीनदयाल जी को सबसे पहले गंगापुर सिटी (सवाईमाधोपुर) के रेलवे विद्यालय में मामा राधारमणजी ने भर्ती कराया। थोड़े दिन बाद ही राधारमण जी का वहाँ से स्थानांतरण हो गया। दीनदयाल जी भी उनके साथ कोटा में अध्ययन हेतु चले गए। वे अपने चचेरे मामा नारायण लाल जी के साथ राजगढ़ (अलवर) पढ़ने के लिए गए। दीनदयाल जी के मामा नारायणलाल जी का स्थानांतरण राजगढ़ से सीकर हो गया। उन्होंने सीकर में 1934 में दसवीं की परीक्षा श्री कल्याण हाई स्कूल में पढ़कर अजमेर बोर्ड से दी एवं अजमेर बोर्ड में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। सीकर के महाराजा श्री कल्याण सिंह जी ने दीनदयाल जी को स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया।

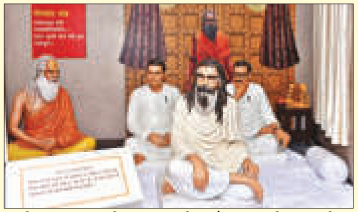

श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी, पं. पू. श्री गुरुजी, श्री अटलजी व दीनदयाल जी

तत्पश्चात् दीनदयाल जी इंटरमीडियट की पढ़ाई के लिए पिलानी गये जहाँ से इंटरमीडियट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। सेठ घनश्याम दास जी बिरला ने उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया। पंडित दीनदयाल जी का 1916 से 1936 तक का लगभग 20 वर्ष की आयु तक का जीवन राजस्थान में व्यतीत हुआ। दीनदयाल जी उच्च शिक्षा के लिए कानपुर चले गए। कानपुर में उनका संपर्क नानाजी देशमुख, सुंदर सिंह जी भंडारी से हुआ। श्री भाऊराव जी देवरस के संपर्क में आने पर वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बन गए। तत्पश्चात् दीनदयाल जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्णकालीन प्रचारक बन गए।

सन 1951 में अखिल भारतीय जनसंघ का गठन होने पर वे संगठन मंत्री बनाये गये। दो वर्ष बाद सन् 1953 में वे अखिल भारतीय जनसंघ के महामंत्री निर्वाचित हुए। कालीकट अधिवेशन (दिसम्बर 1967) में वे अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

स्मारक का उद्घाटन करते हुए मा. श्री अमित शाह जी

पं. दीनदयाल जी उपाध्याय राष्ट्रजीवन दर्शन के श्रेष्ठ चिंतक थे एवं उन्होंने भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल प्रस्तुत करते हुए एकात्म मानववाद की अवधारणा दी। वे कहते थे ''भारत में रहने वाला और इसके प्रति ममत्व की भावना रखने वाला मानव समूह एक जन है। उसकी जीवन प्रणाली, कला, साहित्य, दर्शन सब भारतीय संस्कृति है। इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का आधार यह संस्कृति है। इस संस्कृति में निष्ठा रहे तभी भारत एकात्म रहेगा।''

जिस राष्ट्र मंदिर का निर्माण इतने दिनों से अनेक आत्म विजयी ऋषि मुनि, दिग्विजयी सम्राट, कवि, कलाकार, साहित्यकार, स्मृतिकार, पुराणों के रचयिता, तथा धर्मशास्त्रों के प्रणेता करते चले आ रहे थे उस मंदिर में राष्ट्रपुरुष की मूर्ति स्थापित करने तथा उस मंदिर के प्रथम पुजारी बनने का हमें निमंत्रण देकर वे 11 फरवरी, 1968 की रात में रेलयात्रा के दौरान मुगलसराय के आसपास संदिग्ध स्थिति में इस दुनिया को छोड़ गए।

पं. दीनदयाल जी उपाध्याय जी की मूर्ति का अनावरण करते हुए मा. श्री अमित शाह जी एवं श्रीमती वसुंधरा राजे जी

पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक :– ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, वरिष्ठ चिंतक और जनसंघ के संस्थापक सदस्य स्वर्गीय पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय की स्मृति में जयपुर से 20 किलोमीटर दूर धानक्या रेलवे स्टेशन के पास राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण द्वारा राजस्थान सरकार से वित्तीय व प्रशासनिक स्वीकृति प्राप्त कर भूमि व भवन पर लगभग 10 करोड़ की लागत से एक विहंगम राष्ट्रीय स्मारक बनाया गया है। इस स्मारक के लिए धानक्या रेलवे के 11 क्वार्टर लेकर 4500 वर्गमीटर क्षेत्र में प्रोन्नति प्राधिकरण ने पंडित दीनदयाल जी के संस्कार सृष्टि वाले रेलवे क्वार्टर को संरक्षित व संवर्धित किया। इस स्मारक में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के जीवन की विभिन्न घटनाओं को 3डी, 2डी व प्रिंट/इलेक्ट्रोनिक मीडिया में प्रदर्शित किया गया।

स्मारक में दीनदयाल जी उपाध्याय की अष्टधातु की 15 फुट ऊंची आदमकद मूर्ति लगायी गई और भव्य स्मारक जोधपुरी पत्थर से बनाया गया। उनके जीवन से जुड़ी घटनाओं, जनसभाओं व समाज के वरिष्ठ व प्रबुद्धजनों से मुलाकातों को भी यहाँ दर्शाया गया है। स्मारक में एक पुस्तकालय भी बनाया गया है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति :– समिति का उद्देश्य पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मारक एवं इससे संबंधित स्थलों के सर्वांगीण विकास एवं संरक्षण के लिए सरकार को सकारात्मक सहयोग प्रदान करना है। यह समिति स्मारक स्थल धानक्या (जयपुर) एवं निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्र, उपाध्याय की शिक्षा एवं जीवन से संबंधित स्थानों से जोड़ने, ऐतिहासिक, संस्कृति एवं राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान विस्तार एवं संस्कारयुक्त सामाजिक एवं संस्कृति रक्षण व संवर्धन कार्यक्रमों से देश व दुनिया को जोड़ने का कार्य करेगी।

राष्ट्रीय स्मारक एवं उनके स्मृति स्थलों पर जल संरक्षण, पर्यावरण, लोकमेलों, उत्सवों, राष्ट्रभक्ति कार्यक्रमों का आयोजन भी यह समिति करेगी। यह समिति पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित दर्शन एवं सिद्धान्तों पर शोध, साहित्य प्रकाशन, प्रसारण, पर्यटन, भारतीय संस्कृति, कौशल विकास, स्वदेशी, गौ संरक्षण आदि कार्यों को भी प्रमुखता से लेगी। उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अध्ययन केंद्र, प्रशिक्षण केंद्र, विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय की स्थापना, केंद्र सरकार और राज्य सरकार व समाज से परियोजना व आर्थिक अनुदान प्राप्त करना तथा युवा व महिला सशक्तीकरण हेतु रोजगार मूलक कार्यक्रमों का आयोजन भी इस समिति के लक्ष्य है। यह समिति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भारतीय ज्ञान को युगानुकूल एवं आधुनिक ज्ञान को देशानुकूल प्रस्तुत करने की दृष्टि से शोध संवर्द्धन एवं सकारात्मक कार्य करेगी।

पं. दीनदयाल जी को जानों का बटन दबाकर उतर देते रेल मंत्री श्री पीयूष जी गोयल व श्री राज्यवर्धन सिंह जी

हम सब का श्रद्धास्थल : आज पंडित दीनदयाल जी का बचपन जहां बीता उस गांव में उनके स्मारक का लोकार्पण मेरे लिए सौभाग्य का विषय है। पंडित जी के बताये रास्ते पर आज देश के करोड़ों लोग चल रहे है। उसमें से एक मैं भी हूँ। अंत्योदय के रास्ते से किया गया विकास ही देश के लिए उचित है। यह हम सब का श्रद्धास्थल है।

शुभकामनाएं – अमित शाह, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी

पंडित दीनदयाल उपाध्याय को जानो

संकलनकर्त्ता :
पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति

प्रकाशक :
पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति
सेवा सदन, सहकार मार्ग, सहकार लेन,
लालकोठी योजना, जयपुर-302 015
अणुडाक : deendayalupadhyaysmriti@gmail.com
वेबस्थल : www.deendayalupadhyaysmriti.org

सर्वाधिकार : पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति

प्रथम संस्करण :
11 आश्विन कृष्ण बुधवार, विक्रम संवत् 2076
25 सितम्बर, 2019

मूल्य : 20.00 रुपये

मुद्रक :
कुमार एण्ड कम्पनी
9, हथरोई, अजमेर रोड
जयपुर - 302 001
दूरभाष : 0141-2375909

भूमिका

स्वतंत्रता पश्चात् पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने देश की समस्याओं के समाधान के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने पूंजीवाद तथा समाजवाद की विचारधारा को भारत के अनुकूल नहीं बताते हुए एकात्म मानव दर्शन प्रस्तुत किया। आज जलवायु परिवर्तन की समस्या ने विश्व के अस्तित्व के समक्ष चुनौती प्रस्तुत कर दी है। ऐसी स्थिति में पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत विचार व दर्शन महत्वपूर्ण हो गया है। आज देश व विश्व में भारतीय ज्ञान की मांग बढ़ने लगी है। इस दृष्टि से पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार देश के प्रत्येक वर्ग के पास पहुंचने चाहिए।

भारत में 25 सितम्बर को पं. दीनदयाल उपाध्याय का जयंती समारोह मनाया जाता है। उनके द्वारा उनके विचार व दर्शन पर सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं। उनका विचार एवं दर्शन आसानी से सभी को समझ में आ जाए इस दृष्टि से प्रश्नोत्तर के रूप में यह लघु पुस्तिका प्रकाशित ''पंडित दीनदयाल उपाध्याय को जानों'' प्रकाशित की जा रही हैं। इस पुस्तिका में जो सामग्री प्रश्नोत्तर के रूप में प्रस्तुत की गई है वह पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत विचार है या उनके विचारों से संबन्धित है। इस लघु पुस्तिका के लेखन व संपादन में पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति के सदस्यों का योगदान सराहनीय है।

इस लघु पुस्तिका से स्कूली छात्र व पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में रुचि रखने वाले सामान्य व्यक्ति व कार्यकर्ता लाभान्वित होंगे।

प्रो. मोहनलाल छीपा
अध्यक्ष
पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति, जयपुर

पंडित दीनदयाल उपाध्याय उवाच

हम राष्ट्र मन्दिर के प्रथम पुजारी बनें

जिस राष्ट्र मन्दिर का निर्माण इतने दिनों से अनेक आत्म-विजयी ऋषि-मुनि, दिग्विजयी सम्राट्, कवि, कलाकार, साहित्यकार, स्मृतिकार, पुराणों के रचयिता तथा धर्मशास्त्रों के प्रणेता करते चले आ रहे हैं, आज उस मंदिर में राष्ट्रपुरुष की मूर्ति स्थापित करके उसे अभिमन्त्रित करना है। भगवान को धन्यवाद दें कि यह सौभाग्य हमको प्राप्त हुआ है। इस मन्दिर के प्रथम पुजारी बनें। ऐसा प्रबन्ध कर चलें कि पीछे आने वाली पीढ़ियाँ इस मन्दिर में अनन्तकाल तक पूजा कर सकें।

–पंडित दीनदयाल उपाध्याय

'बदलना होगा'

जो प्रवृति और व्यवस्था, जो राजनीति व अर्थनीति, जो सामाजिक नियम और शिक्षा पद्धति हमें कर्म-विहीन, आलसी और निद्रालु बनावे वह कलयुगी है। उसे बदलना होगा। कृतयुग का उद्घोष है - चरैवेति!

–पंडित दीनदयाल उपाध्याय

अज्ञात से डर क्यों....

''अतीत एक तथ्य है, वर्तमान अस्थिर है और भविष्य अज्ञात। अज्ञात से कुछ लोगों को डर लगता है- इसलिए वे वर्तमान से चिपके रहना चाहते हैं या बीते को वापस लाना चाहते हैं किन्तु प्रकृति के नियम और काल के क्रम के विपरित काम करने वाले सफल नहीं हो सकते ।

भविष्य से डरिये मत, बल्कि उसके निर्माण में रुचि लीजिये। संजोये सपनों को संवारिये, कल्पना को कर्म से गढ़िये और योजना को युक्ति से पूरा करिये।''

–पंडित दीनदयाल उपाध्याय

आँसू मत बहाओ

''देश की दुर्दशा तथा दीन-दुखियों पर दलबद्ध दुष्ट दानवों के अनाचार देख कर केवल दो आँसू बहाने की अपेक्षा देह को कष्ट देकर दम्भियों के दंभ को दूर करना होगा, दुष्टों की दुष्टता को दलन करना होगा।''

–पंडित दीनदयाल उपाध्याय

'हम सभी श्रम की साधना में झुकें'

राजा और रंक, पूंजीपति और श्रमिक, अमीर और गरीब सबको श्रम की साधना में झुकना होगा। श्रम से पराङ्मुख, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संरक्षण समाप्त करने होंगे। श्रम के लिए भटकती भुजाओं को काम देना होगा। जहाँ राष्ट्रव्यापी श्रम है, वहाँ निर्धनता और विषमता टिक नहीं सकती। जहाँ समता और संपन्नता है, वहां सत्य है, वही शिव और सुंदर है। नया युग श्रम युग हो। हममें से प्रत्येक इस युग-निर्माण में जुट जाए, यही कामना है।

–पंडित दीनदयाल उपाध्याय

'एक ही सिक्के के दो पहलू'

स्वतंत्रता के साथ स्वावलम्बन जुड़ा हुआ है दोनों ही सिक्के के दो पहलू के समान है। स्वतंत्र राष्ट्र कभी परावलम्बी नहीं होगा और परावलम्बी कभी स्वतंत्र नहीं हो सकता क्योंकि परावलम्बन से परानुकृति आती है, परावलम्बन में हम अपने आप को पहचान नहीं पाते।

–पंडित दीनदयाल उपाध्याय

सन्यासी चाहिए

''आज गृहस्थी के झंझट में पड़ने का अवकाश नहीं है। आज तो सब शक्ति समाज के हित में ही लगाने की आवश्यकता है गृहस्थ और संन्यास दोनों ही साधन है, आज दूसरा ही उपयुक्त है। कार्य इतना अधिक तथा समय इतना थोड़ा है कि और कोई मार्ग ही नहीं है; किंतु मठ में पड़े रहना और समाज का भार बन कर जीवन व्यतीत करना तो संन्यास धर्म का आदर्श नहीं है। सन्यासी का जीवन, निष्क्रियता, आनंद और सुख का नहीं अपितु सतत् कर्मण्यता, कष्ट और दुखों का जीवन है। उसका काम समाज का भार बढ़ाना नहीं किंतु उसका भार हल्का करना है।''

–पंडित दीनदयाल उपाध्याय

मर्यादा की बात....

''व्यवस्था और नियम समाज की रचना के लिए होते हैं। महत्व नियम और व्यवस्था को नहीं, अपितु समाज के संगठन और जीवन को है। यदि समाज के जीवन के लिए मर्यादा स्थापित करने की आवश्यकता हो तो मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री राम के समान मर्यादाएं बांधी जाती है और यदि मर्यादा-उल्लंघन की आवश्यकता हो तो योगेश्वर कृष्ण की भांति मर्यादायें तोड़ी भी जाती हैं।''

–पंडित दीनदयाल उपाध्याय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय को जानो

प्रश्न 1 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय कौन थे?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय जनसंघ के नेता और भारतीय राजनीतिक एवं आर्थिक चिंतन को वैचारिक दिशा देने वाले पुरोधा थे। वे एकात्म मानवदर्शन के प्रणेता, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक, भारतीय जनसंघ के संस्थापक महामंत्री, कुशल संगठक, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ एवं दार्शनिक थे।

प्रश्न 2 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म कब हुआ था ?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म अश्विन कृष्णा त्रयोदशी संवत् 1973 विक्रमी तद्नुसार 25 सितंबर 1916 को हुआ था।

प्रश्न 3 : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के पिता का क्या नाम था?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय के पिता का नाम श्री भगवती प्रसाद उपाध्याय था ।

प्रश्न 4 : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की माता का क्या नाम था?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की माता का नाम रामप्यारी देवी था।

प्रश्न 5 : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की संस्कार सृष्टि भूमि कौन सी है?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की संस्कार सृष्टि भूमि धानक्या रेलवे स्टेशन, जयपुर है ।

प्रश्न 6 : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के छोटे भाई का क्या नाम था?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के छोटे भाई का नाम शिवदयाल था।

प्रश्न 7 : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की माता का स्वर्गवास कब हुआ?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की माता का स्वर्गवास 8 अगस्त, 1924 को हुआ ।

प्रश्न 8 : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के माता-पिता के मरणोपरान्त इनका पालन-पोषण किसने किया?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के माता-पिता के मरणोपरान्त इनका पालन-पोषण उनके नाना चुन्नीलाल शुक्ला ने किया ।

प्रश्न 9 : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का अधिकांश शिशुकाल कहां व्यतीत हुआ?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का अधिकांश शिशुकाल नाना चुन्नीलाल जी के धानक्या, जयपुर में व्यतीत हुआ ।

प्रश्न 10 : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के नानाजी का क्या नाम था?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के नानाजी का नाम चुन्नीलाल जी शुक्ला था ।

प्रश्न 11 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय के पैतृक गांव का क्या नाम है?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय के पैतृक गांव का नाम नगला चन्द्रभान, मथुरा, उत्तर प्रदेश है ।

प्रश्न 12 : पण्डित चुन्नीलाल जी शुक्ला दीनदयाल उपाध्याय के जन्म के समय किस पद पर कहां सेवारत थे?

उत्तर : पण्डित चुन्नीलाल जी शुक्ला पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्म के समय रेलवे स्टेशन मास्टर, धानक्या, जयपुर पद पर सेवारत थे ।

प्रश्न 13 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के प्रपितामह (परदादा) कौन थे?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के प्रपितामह (परदादा) पंडित हरिराम उपाध्याय जो विख्यात ज्योतिषी थे।

प्रश्न 14 : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के दादा का क्या नाम था?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के दादा का नाम पंडित रामप्रसाद जी उपाध्याय था ।

प्रश्न 15 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय के पिता किस पद पर और कहां पदस्थापित थे?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय के पिता श्री भगवती प्रसाद उपाध्याय सहायक रेलवे स्टेशन मास्टर, जलेसर में पदस्थापित थे।

प्रश्न 16 : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय ने प्रथम बार किस विद्यालय में प्रवेश लिया?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय ने प्रथम बार रेलवे विद्यालय, गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर, राजस्थान में प्रवेश लिया ।

प्रश्न 17 : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय ने किस आयु में पहली बार स्कूल के दर्शन किये?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय ने 1925 में जब 9 वर्ष के थे पहली बार स्कूल के दर्शन किये।

प्रश्न 18 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय ने मिडिल स्तर की शिक्षा कहां से प्राप्त की?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय ने मिडिल स्तर की शिक्षा राजगढ़ (अलवर) राजस्थान से प्राप्त की ।

प्रश्न 19 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय ने हाई स्कूल की परीक्षा कहां से उत्तीर्ण की ?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय ने हाई स्कूल की परीक्षा श्री कल्याण हाईस्कूल सीकर, राजस्थान से उत्तीर्ण की ।

प्रश्न 20 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने हाईस्कूल परीक्षा किस श्रेणी से उत्तीर्ण की तथा कितनी छात्रवृत्ति मिली?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने हाईस्कूल परीक्षा कल्याण हाईस्कूल सीकर से अजमेर बोर्ड से उत्तीर्ण की एवं समस्त बोर्ड में प्रथम रहे। सीकर महाराजा कल्याण सिंह ने उन्हें 250 रु. पुरस्कार व अग्रिम अध्ययन हेतु 10 रु. प्रतिमाह छात्रवृत्ति व पुस्तकों के लिए स्वीकृत किये ।

प्रश्न 21 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय को स्वर्णपदक किस उपलब्धि के लिए मिला?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय को स्वर्णपदक सन् 1934 में दसवीं कक्षा बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर मिला ।

प्रश्न 22 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय ने इण्टरमीडिएट परीक्षा कहां से उत्तीर्ण की?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय ने इण्टरमीडिएट परीक्षा बिड़ला कॉलेज, पिलानी झुंझुनूं, राजस्थान से उत्तीर्ण की ।

प्रश्न 23 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने इंटरमीडिएट परीक्षा किस वर्ष एवं किस श्रेणी में उत्तीर्ण की ?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने इंटरमीडिएट परीक्षा बिड़ला कॉलेज, पिलानी से 1936 में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तथा समस्त बोर्ड में न केवल प्रथम स्थान प्राप्त किया बल्कि सभी विषयों में विशेष योगयता के अंक प्राप्त किये।

प्रश्न 24 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्री घनश्याम दास बिड़ला के सम्पर्क में सर्वप्रथम कैसे आये?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षा में बिड़ला कॉलेज, पिलानी में प्रथम आने पर श्री घनश्यामदास बिड़ला ने उन्हें कॉलेज में बुलाकर स्वर्ण पदक दिया, 250 रु. नकद पुरस्कार दिया तथा 10 रु. प्रतिमाह छात्रवृत्ति प्रदान करने की घोषणा की।

प्रश्न 25 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राजस्थान में कितने वर्ष व कहां-कहां अध्ययन किया?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राजस्थान में 1916-1924 तक अपने नाना श्री चुन्नीलाल के यहाँ धानक्या के रेलवे क्वार्टर में स्कूल से पूर्व शिक्षा संस्कार प्राप्त किये। उन्होंने गंगापुर सिटी, कोटा, राजगढ़ (अलवर) में मिडिल कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की और कल्याण हाई स्कूल से 1934 में दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की।

प्रश्न 26 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राजस्थान में अध्ययन किस के साथ रहकर किया।

उत्तर : उन्होंने गंगापुर सिटी कोटा में अध्ययन अपने मामा राधारमण के साथ रहकर तथा राजगढ़, सीकर में राधारमण जी के चचेरे भाई नारायण जी शुक्ला के साथ रहकर अध्ययन किया।

प्रश्न 27 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन के कितने वर्ष राजस्थान में गुजरे?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजस्थान में 1916 से 1936 तक जीवन प्रांत के विभिन्न स्थानों पर व्यतीत हुआ।

प्रश्न 28 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय ने स्नातक (बी.ए.) शिक्षा कहां से प्राप्त की?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय ने स्नातक शिक्षा सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश से प्राप्त की ।

प्रश्न 29 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने बी.ए. की परीक्षा कब व किस श्रेणी में उत्तीर्ण की ?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने बी.ए. की परीक्षा सनातन धर्म कॉलेज कानपुर, उत्तर प्रदेश से 1939 में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

प्रश्न 30 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने एम.ए. में प्रवेश किस विषय तथा किस कॉलेज में लिया?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. करने हेतु आगरा के सेण्ट जॉन्स कॉलेज में प्रवेश लिया।

प्रश्न 31 : क्या पंडित दीनदयाल उपाध्याय एम.ए. की पढ़ाई पूरी कर पाये?

उत्तर : उन्होंने ने एम.ए. प्रथम वर्ष प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया परन्तु ममेरी बहन की बीमारी के कारण एम.ए. उत्तरार्द्ध की परीक्षा नहीं दे सके।

प्रश्न 32 : क्या पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने प्रशासनिक परीक्षा में भाग लिया तथा उसका परिणाम क्या रहा?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशासनिक परीक्षा में बैठे तथा उत्तीर्ण भी हुए, साक्षात्कार में वे चुन भी लिए गये परन्तु उन्होंने प्रशासनिक नौकरी नहीं की।

प्रश्न 33 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय बी. टी. की परीक्षा देने के लिए कहाँ गये?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय बी. टी. की परीक्षा देने के लिए प्रयाग, 1941 में गये ।

प्रश्न 34 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में कब आये?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय कानपुर में अध्ययन के दौरान 1937 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आये।

प्रश्न 35 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय किसके माध्यम से संघ के संपर्क में आये?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय बी.ए. की पढ़ाई करते समय 1937 में उनके सहपाठी बालुजी महाशब्दे के प्रयास से संघ के सम्पर्क में आये।

प्रश्न 36 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय संघ प्रचारक कब बने?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय संघ प्रचारक जुलाई सन् 1942 में बने ।

प्रश्न 37 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय ने संघ के प्रचारक के रूप में अपना कार्य कहां से प्रारम्भ किया?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय ने संघ के प्रचारक के रूप में अपना कार्य लखीमपुर खीरी जिले से प्रारम्भ किया ।

प्रश्न 38 : लखीमपुर खीरी भारत के किस राज्य में है?

उत्तर : लखीमपुर खीरी भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में है।

प्रश्न 39 : भारतीय जनसंघ के प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर : भारतीय जनसंघ के प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी थे ।

प्रश्न 40 : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय को महामंत्री कब नियुक्त किया गया?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल उपाध्याय को महामंत्री भारतीय जनसंघ के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन कानपुर में दिसम्बर 1952 में नियुक्त किया गया ।

प्रश्न 41 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में कब निर्वाचित हुए?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में 29 दिसम्बर, 1967 को निर्वाचित हुए ।

प्रश्न 42 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय को किस अधिवेशन में जनसंघ का राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया था?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय को कालीकट (कोझीकोड) केरल अधिवेशन में जनसंघ का राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया था ।

प्रश्न 43 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय कब से-कब तक जनसंघ के महामंत्री रहे?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय सन् 1951 से 1967 तक जनसंघ के महामंत्री रहे ।

प्रश्न 44 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय कब से-कब तक जनसंघ के अध्यक्ष रहे?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय 29 दिसम्बर, 1967 से 11 फरवरी, 1968 तक जनसंघ के अध्यक्ष रहे।

प्रश्न 45 : पंडित दीनदयाल जी का जनसंघ के बारे में क्या विचार था?

उत्तर : उनके अनुसार जनसंघ एक दल नहीं वरन् आन्दोलन है।

प्रश्न 46 : जनसंघ के प्रथम अधिवेशन में पंडित दीनदयाल उपाध्याय को क्या भूमिका दी गयी।

उत्तर : जनसंघ के प्रथम अधिवेशन में पंडित दीनदयाल उपाध्याय को महामंत्री बनाया गया।

प्रश्न 47 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी जनसंघ के महामंत्री कितने वर्ष रहे?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी 15 वर्ष तक भारतीय जनसंघ के महामंत्री रहे।

प्रश्न 48 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि क्या थी?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि उनके राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाते दिया गया भाषण था जो भारतीय जनसंघ - दिशा बोध, भारतीय जनसंघ प्रकाशन में प्रकाशित हुआ।

प्रश्न 49 : जनसंघ के प्रथम अधिवेशन में दीनदयाल जी द्वारा प्रमुख प्रस्ताव किन विषयों पर रखे गये थे?

उत्तर : जनसंघ के प्रथम अधिवेशन में दीनदयाल जी द्वारा प्रमुख प्रस्ताव दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद का विरोध, भारत में स्थित विदेशी उपनिवेश, कर नीति तथा बहुसूत्री बिक्रीकर, चुनाव नियमों में संशोधन, पुनर्वास, पंचवर्षीय योजना, सांस्कृतिक पुनरुत्थान विषयों पर रखे गये थे।

प्रश्न 50 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने जनसंघ के दर्शन को किस प्रकार प्रकट किया?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा - जनसंघ मूलत: संस्कृतिवादी संगठन है। संस्कृति की आधारशीला पर हमारा आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक चिंतन खड़ा है।

प्रश्न 51 : जनसंघ के अध्यक्ष श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कानपुर अधिवेशन में उपाध्याय जी की कार्यक्षमता, संगठन कौशल एवं वैचारिक दृष्टि के आधार पर उनके बारे में क्या कहा?

उत्तर : जनसंघ के अध्यक्ष श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा, यदि मुझे दो दीनदयाल मिल जाएं तो मैं भारतीय राजनीति का नक्शा बदल दूँ।

प्रश्न 52 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने प्रकाशन कार्य कब प्रारम्भ किया?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के प्रयत्न व प्रेरणा से 1945 में मासिक 'राष्ट्रधर्म' प्रकाशन लखनऊ में प्रारम्भ किया । दैनिक 'स्वदेश' व 'तरुण भारत' भी प्रकाशित किये। साप्ताहिक 'पांचजन्य' भी प्रकाशित करना प्रारम्भ किया।

प्रश्न 53 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 'अखण्ड भारत क्यों' विषयक पुस्तक की विषय-सामग्री क्या है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने इसमें प्राचीन भारतीय साहित्य को संदर्भित करते हुए भारत में युगों से चली आ रही सांस्कृतिक व राजनीतिक परंपरा का उल्लेख किया है जो भौगोलिक भारत को एक एकात्म राष्ट्र के रूप में विकसित करने में समर्थ हुई थी।

प्रश्न 54 : 'सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य' उपन्यास के लेखक कौन थे?

उत्तर : 'सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य' उपन्यास के लेखक पंडित दीनदयाल उपाध्याय थे।

प्रश्न 55 : 'जगद्गुरु शंकराचार्य' उपन्यास कब व किसके द्वारा लिखा गया?

उत्तर : 'जगद्गुरु शंकराचार्य' उपन्यास पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा 1947 में लिखा गया।

प्रश्न 56 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की प्रमुख रचनाएं कौन सी हैं?

उत्तर : सम्राट चन्द्रगुप्त, जगद्गुरु शंकराचार्य, भारतीय अर्थनीति-विकास की एक दिशा, राष्ट्र-जीवन की दिशा एवं इंटीग्रल ह्यूमनिज्म (एकात्म मानववाद)।

प्रश्न 57 : पत्रकारिता के क्षेत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय किन समाचार पत्रों से जुड़े रहे?

उत्तर : पत्रकारिता के क्षेत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रधर्म - मासिक, पांचजन्य - साप्ताहिक, स्वदेश - दैनिक समाचार पत्रों से जुड़े रहे।

प्रश्न 58 : पंडित दीनदयाल जी द्वारा लिखित प्रथम पुस्तक का नाम क्या है? वह कब तथा उसका प्रकाशक कौन है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रथम पुस्तक 'सम्राट चंद्रगुप्त' लिखी गयी। उसके प्रकाशक राष्ट्रधर्म पुस्तक प्रकाशन, लखनऊ, 1946 है।

प्रश्न 59 : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय द्वारा दैनिक समाचार पत्र 'स्वदेश' का नाम बदलकर कौन सा नया नाम रखा गया था?

उत्तर : पण्डित दीनदयाल जी उपाध्याय द्वारा दैनिक समाचार पत्र 'स्वदेश' का नाम बदलकर 'तरुण भारत' नया नाम रखा गया था।

प्रश्न 60 : भाषा के सम्बन्ध में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राजनीतिज्ञों के बारे में क्या टिप्पणी की?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राजनीतिज्ञों के बारे में कहा कि राजनीतिज्ञ भाषा के नाम पर लड़ सकते हैं परन्तु भाषा का सृजन नहीं कर सकते।

प्रश्न 61 : 'स्वभाषा' के सम्बन्ध में दीनदयाल उपाध्याय की क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर : उन्होंने कहा 'हमारे स्वतंत्रता संग्राम के प्रारम्भिक दिनों में ब्रिटिश समर्थक तत्वों को हमारा सामान्य उत्तर होता था कि 'स्वराज्य' (Self Rule) की प्यास सुराज्य (Good Rule) से नहीं बुझाई जा सकती। आज भी 'स्वभाषा' की आवश्यकता की पूर्ति 'सुभाषा' से नहीं हो सकती।

प्रश्न 62 : हिन्दी व प्रादेशिक भाषाओं के तनाव तथा सार्वदेशिक भाषा के अभाव की समस्या के समाधान के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सुझाव क्या था?

उत्तर : हिन्दी व प्रादेशिक भाषाओं के तनाव तथा सार्वदेशिक भाषा के अभाव की समस्या के समाधान के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सुझाव था – संस्कृत को राष्ट्रभाषा के पद पर अधिष्ठित किया जाये ।

प्रश्न 63 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय का स्वतंत्र भारत में अंग्रेजी के राजभाषा बने रहने पर क्या विचार था?

उत्तर : उन्होंने कहा कि स्वतंत्र भारत में अंग्रेजी का राजभाषा बना रहना हमारी राष्ट्रीय स्वतंत्रता का अपमान है। अंग्रेजी का यह स्थान स्वाभाविक रूप से हिन्दी को मिलना चाहिये । हिन्दी स्वाभाविक राजभाषा है।

प्रश्न 64 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार त्रिभाषा नीति की कौन सी बात प्रमुख है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार मातृभाषा को सर्वोच्च स्थान दिया जाना चाहिए एवं माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा मातृभाषा में ही होनी चाहिए । प्रत्येक विद्यार्थी को कम से कम

दो देशज भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए। विदेशी भाषा के नाते अंग्रेजी भाषा सीखने का भी प्रबन्ध होना चाहिए।

प्रश्न 65 : कालीकट में जनसंघ के अधिवेशन के समय स्वभाषा के संबन्ध में क्या कहा?

उत्तर : कालीकट में जनसंघ के अधिवेशन के समय स्वभाषा के संबन्ध में कहा कि हिन्दी को निर्द्वंद्व रूप से सम्पूर्ण राष्ट्र की व्यावहारिक राजभाषा बनाने तथा अंग्रेजी को हटाने के लिए आंदोलन किया जाए।

प्रश्न 66 : दीनदयाल जी ने अंग्रेजी के परीक्षाओं के माध्यम के संबन्ध में क्या कहा।

उत्तर : उन्होंने जनसंघ के द्वारा यह मांग की कि संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षाएं प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से हों तथा भर्ती के लिए किसी भाषा विशेष के ज्ञान की बाध्यता न हो।

प्रश्न 67 : भारतीय संस्कृति के अनुसार मनुष्य के जन्म लेते ही उस पर 3 ऋण कौन से होते हैं?

उत्तर : भारतीय संस्कृति के अनुसार मनुष्य के जन्म लेते ही उस पर 3 ऋण होते हैं पितृ ऋण, देव ऋण एवं ऋषि ऋण ।

प्रश्न 68 : ऋषि ऋण से उऋण कैसे होते हैं ?

उत्तर : जब हम भावी संतति की शिक्षा की व्यवस्था करते हैं तब हम ऋषि ऋण से उऋण हो जाते है।

प्रश्न 69 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार शिक्षा के प्रमुख माध्यम क्या हैं?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार संस्कार, अध्यापन और स्वाध्याय शिक्षा के प्रमुख माध्यम हैं।

प्रश्न 70 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार शिक्षा किस भाषा में प्रदान की जाए?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं है बल्कि वह स्वयं ही एक अभिव्यक्ति है। भाषा के एक-एक शब्द, वाक्य रचना, मुहावरों आदि के पीछे समाज जीवन की अनुभूतियां, राष्ट्र की घटनाओं का इतिहास छिपा हुआ है, इसलिए शिक्षा का माध्यम स्वभाषा ही हो सकता है।

प्रश्न 71 : जनसंघ ने एकात्म मानववाद को अपनी मार्गदर्शक विचारधारा के रूप में कब अपनाया?

उत्तर : जनसंघ ने एकात्म मानववाद को अपनी मार्गदर्शक विचारधारा के रूप में 1965 के विजयवाड़ा अधिवेशन में अपनाया।

प्रश्न 72 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार व्यक्ति क्या है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा का समेकित निवास है व्यक्ति, उसके सुख का अर्थ है इन सब का सुख । व्यक्ति के जन्म से ही उसका सुख समाज पर निर्भर करता है।

प्रश्न 73 : धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष-इन चारों पुरुषार्थों को संतुलित रूप से समायोजित करने और सम्पूर्ण चराचर जगत को व्यक्ति, समाज, सृष्टि एवं परमात्मा - इन चारों को एकात्म रूप में मानकर सर्वांगीण विकास का दर्शन क्या कहलाता है?

उत्तर : एकात्म मानवदर्शन।

प्रश्न 74 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने पूंजीवाद एवं समाजवाद की अवधारणा के समानांतर कौन सी अवधारणा दी?

उत्तर : एकात्म मानववाद।

प्रश्न 75 : व्यष्टि किसे कहते हैं?

उत्तर : व्यक्ति के शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा के समुच्चय का नाम व्यष्टि है। इन चारों के संतुलन को वे मानव का व्यक्तिकरण मानते हैं। यह व्यष्टि है।

प्रश्न 76 : समष्टि किसे कहते हैं?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार समाज भी एक जीवमान एवं प्राकृतिक इकाई है। राष्ट्रीय समाज का भी एक सामूहिक मन, सामूहिक बुद्धि, एक सामान्य इच्छा होती है जो समष्टि को इंगित करती है।

प्रश्न 77 : सृष्टि किसे कहते हैं?

उत्तर : सृष्टि का अर्थ है रचना। यह संसार ब्रह्मा की सृष्टि है।

प्रश्न 78 : परमेष्टि किसे कहते हैं?

उत्तर : वैदिक परंपरा के अनुसार सृष्टि के कर्ता ब्रह्मा हैं, भर्ता या पालनकर्ता विष्णु हैं तथा संहर्ता या संहार करने वाला महेश है। यह कर्ता, भर्ता एवं संहर्ता की ईश्वरीय सत्ता ही परमेष्टि है।

प्रश्न 79 : एकात्मता से आपका क्या तात्पर्य है?

उत्तर : संपूर्ण चराचर जगत में एकात्म भाव की अवधारणा भारतीय दर्शन की विशेषता है। अर्थात जो पिंड में है, वही ब्रह्मांड में है। अंश एवं संपूर्ण तत्वत: एक ही है 'यत् पिंडे तत् ब्रह्मांडे' - जो क्षुद्र में है वही विराट में भी है। वटवृक्ष विराट है, बीज सूक्ष्म है। एकात्म भाव से तात्पर्य है जिसमें किसी प्रकार का द्वंद्व नहीं हो, जो जीवन को टुकड़ों में नहीं बांटता हो।

प्रश्न 80 : मनुष्य किन तत्वों का समुच्चय है ?

उत्तर : मनुष्य शरीर, मन ,बुद्धि एवं आत्मा जैसे तत्वों का समुच्चय है। इन चारों का सुख मनुष्य का सुख है।

प्रश्न 81 : एकात्म मानववाद विचारधारा के दृष्टा कौन थे?

उत्तर : एकात्म मानववाद के दृष्टा पंडित दीनदयाल उपाध्याय थे।

प्रश्न 82 : एकात्म मानववाद दर्शन का क्या अर्थ है?

उत्तर : मानव जीवन तथा सम्पूर्ण प्रकृति के एकात्म संबन्धों का दर्शन।

प्रश्न 83 : भारत की आजादी के समय पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने विकास के किस मार्ग का सुझाव दिया?

उत्तर : जब हमारा देश आजाद हुआ, तब देश में इस बात पर विवाद था कि भारतवर्ष 'पूँजीवाद' के रास्ते को अपनाए या समाजवाद के रास्ते को। इन दोनों ही रास्तों को खोजने वाले लोग विदेशी यूरोपियन थे। उनके देशों की परिस्थिति में ही ये विचार विकसित हुए थे। तब पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने कहा कि हमारी ऐसी क्या मजबूरी कि हम इन विदेशियों की विचारधारा में से ही किसी एक को चुनें। जिन विचारधाराओं की बहस में एक भी भारतीय शामिल नहीं है तथा न ही वे विचार भारतीय विचार धारा में विकसित हुए हैं। दीनदयाल जी ने कहा, हमें अपने देश की संस्कृति तथा इतिहास से सीखकर, अपने देश व दुनिया की जरूरत के हिसाब से अपने विचारों का विकास करना चाहिए। हमें किसी की नकल नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न 84 : व्यक्ति और समाज की पुरुषार्थ साधना कैसी होनी चाहिये?

उत्तर : व्यक्ति और समाज की पुरुषार्थ साधना एक-दूसरे की परस्पर पूरक और पोषक होनी चाहिए।

प्रश्न 85 : पूँजीवाद व समाजवाद की विचारधाराओं से पंडित दीनदयाल उपाध्याय को क्या शिकायत है?

उत्तर : वास्तव में 'पूँजीवाद' का असली नाम व्यक्तिवाद है। यूरोप में ही व्यक्तिवाद के विरोधियों ने इसे पूँजीवाद कहा। इस विचार की मान्यता है कि मानव तो केवल एक व्यक्ति है। यह विचारधारा समाज के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करती। व्यक्ति की आजादी को ही मानव के सुख का आधार मानती है। जब आजाद व्यक्तियों ने दूसरे कमजोर व्यक्तियों का शोषण शुरू कर दिया, समाज में विषमता आ गई तब यूरोप के एक महापुरुष कार्ल मार्क्स ने कहा कि वास्तव में मानव व्यक्ति नहीं है, वरन् समाज है। समाज में समता लाने के लिए व्यक्तियों की आजादी को नियंत्रित करना चाहिए। मानव केवल व्यक्ति है समाज नहीं तथा मानव केवल समाज है, व्यक्ति नहीं। यूरोप के विद्वानों की इस बहस में से व्यक्तिवाद व समाजवाद नामक विचारधाराओं का विकास हुआ। ये दोनों विचार भौतिकतावादी हैं। दोनों ही आध्यात्मिकता का निषेध करते हैं। दीनदयालजी को सबसे बड़ी शिकायत इन विचारों की विदेशियत से थी। दूसरी शिकायत थी कि ये विचार भौतिकवादी हैं, जबकि मानव केवल भौतिकवादी नहीं हो सकता, मानव की आध्यात्मिक आवश्यकताएँ भी हैं तथा इन दोनों का विकास मानवता के लिए जरूरी है। दीनदयालजी की तीसरी शिकायत थी कि ये विचारधाराएँ मानव को व्यक्ति तथा समाज में बाँटती हैं। जब कि व्यक्ति व समाज को इस तरह बाँटा नहीं जाना चाहिए।

प्रश्न 86 : पाश्चात्य व भारतीय चिंतन में मूलभूत अंतर क्या हैं?

उत्तर : पश्चिम में प्रत्येक चीज को टुकड़ों में देखने की आदत है जबकि भारत में सभी बातों के संपूर्ण पहलुओं पर पूर्णत: विचार होता है।

प्रश्न 87 : दीनदयाल उपाध्याय खुद इस समस्या का क्या समाधान देते थे?

उत्तर : दीनदयालजी ने कहा, भारतीय परंपरा, जिसमें गांधीजी भी शामिल हैं, वह मानव को व्यक्ति व समाज में बाँटती नहीं है तथा न ही मानव को केवल भौतिक इकाई मानती है।

प्रश्न 88 : पश्चिम की संस्कृति व भारतीय संस्कृति में मौलिक अंतर क्या हैं?

उत्तर : पश्चिमी संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ है, जबकि भारतीय संस्कृति समाजनिष्ठ से भी बढ़कर ब्रह्मनिष्ठ है।

प्रश्न 89 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार भारतीय परंपरा में मानव को कैसा मानती है?

उत्तर : भारतीय परंपरा मानव को 'एकात्म' मानती है। एकात्म, यानी जिसको बाँटा नहीं जा सकता। न बाँटी जा सकने वाली इकाई को 'एकात्म' कहते हैं। समाज और व्यक्ति इस प्रकार जुड़े हुए हैं, उन्हें अलग-अलग नहीं किया जा सकता। मानव व्यक्ति के रूप में समाज का अभिन्न अंग होता है। व्यक्ति परिवार के बिना नहीं रह सकता। परिवार अपने ग्राम, शहर या मोहल्ले के बिना नहीं रह सकता। ग्राम, शहर से भी आगे देश व दुनिया की इकाइयाँ हैं। व्यक्ति इन सभी सामुदायिकताओं का हिस्सा है, इनसे स्वतंत्र नहीं है। एकात्म मानव का सुख व्यक्ति व समाज में बँटा हुआ नहीं वरन् एकात्म होता है।

प्रश्न 90 : मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति क्या है?

उत्तर : जीवित रहने की इच्छा ही मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है।

प्रश्न 91 : व्यक्ति के सम्बन्ध में व्यक्तिवादी व समाजवादी के बारे में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के क्या विचार हैं?

उत्तर : व्यक्तिवादी विचारक समाज को बंधनकारी मानकर व्यक्ति की स्वतंत्रता की वकालत करते हैं तथा समाजवादी लोग, व्यक्ति को लालची मानकर उस पर समाज का नियंत्रण चाहते हैं। व्यक्तिवादी कहते हैं- 'स्वतंत्रता' में ही सुख है तथा समाजवादी कहते हैं कि सुख के लिए समानता जरूरी है। दीनदयाल उपाध्याय कहते हैं- मानव को स्वतंत्रता व समता दोनों की जरूरत है। स्वतंत्रता व समानता को परस्पर विरोधी बनाना भूल है। उन्हें परस्पर पूरक बनाना चाहिए।

प्रश्न 92 : जीवित रहने की इच्छा का भारतीय उद्घोष क्या है?

उत्तर : 'जीवेत शरदः शतम् शतम्ः' इसका उद्घोष है।

प्रश्न 93 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने मानव व प्रकृति के सम्बन्ध में बारे में क्या कहा?

उत्तर : वे कहते हैं- 'मानव' केवल व्यक्ति व समाज के रूप में ही 'एकात्म' नहीं है, वह इस संसार यानी प्रकृति का भी अविभाज्य अंग है। अत: मानव यदि प्रकृति के साथ अनुचित व्यवहार करेगा तो दु:खी हो जाएगा। भारतीय परंपरा प्रकृति को 'माता' का दर्जा देती है। प्रकृति को प्रदूषित करना पाप है। यह सृष्टि केवल व्यक्ति और समाज से नहीं बनती, मानव को प्रकृति के साथ समुचित व्यवहार सीखना चाहिए।

प्रश्न 94 : जीवेत शरदः शतम् उद्घोष की सफलता हेतु गुरुजनों के आशीर्वाद रूप के स्वस्ति वचन क्या है?

उत्तर : जीवेत शरदः शतम् उद्घोष की सफलता हेतु गुरुजनों के आशीर्वाद रूप के स्वस्ति वचन 'दीर्घायुष्मान भव:' 'चिरंजीव भव:' है।

प्रश्न 95 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार मानव व प्रकृति के बीच सम्बन्ध में यूरोप की विचाराधाराएँ क्या कहती हैं?

उत्तर : 'प्रकृति पर विजय' की कामना करते हैं। प्रकृति का अनियंत्रित उपभोग कर उन्होंने मानवता के सम्मुख संकट खड़े कर दिए हैं। भौतिकवाद एवं भोगवाद उनकी विचारधाराओं से जुड़े हुए हैं।

प्रश्न 96 : समाज किसका चलता-फिरता रूप है?

उत्तर : समाज परमेश्वर का चलता-फिरता रूप है।

प्रश्न 97 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय का आध्यात्मिक तत्व के सम्बन्ध में क्या विचार है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय कहते हैं कि भारत एक आध्यात्मिक तत्त्व को मानवता का अटूट हिस्सा मानता है। यह अनुभूति का क्षेत्र है। भारत उस परमात्मा के किसी एक रूप या पूजा-पद्धति का अनुयायी नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक उत्कर्ष के विविध आयामों का यहाँ विकास हुआ है। इसी कारण सभी प्राणियों में एक ही आत्मा का निवास, जीव दया का भाव तथा अहिंसा आदि गुणों का यहाँ विकास हुआ। दीनदयाल उपाध्याय आध्यात्मिकता को भी मानव की एकात्मता का हिस्सा मानते हैं तथा उसकी अनदेखी को खतरनाक मानते हैं।

प्रश्न 98 : सामाजिक रूप से परमात्मा की पूजा क्या है?

उत्तर : समाज पुरुष की सेवा ही परमात्मा की पूजा है।

प्रश्न 99 : शारीरिक सुखों की प्राप्ति हेतु साधनों की आवश्यकता बौद्धिक, मानसिक, आत्मिक सुखों के साधनों की तुलना में कम होती या ज्यादा?

उत्तर : बौद्धिक, मानसिक, आत्मिक सुखों के साधनों की तुलना में शारीरिक सुखों हेतु साधनों की आवश्यकता अधिक होती है।

प्रश्न 100 : अल्पकालिक सुख व दीर्घकालिक सुख कौनसे हैं?

उत्तर : शारीरिक सुख (इन्द्रियजन्य) अल्पकालिक होते हैं, जबकि मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक सुख अपेक्षाकृत दीर्घकालिक होते हैं।

प्रश्न 101 : मानव की उत्क्रांति (धीरे-धीरे पूर्णता की ओर बढ़ने की प्रवृति) के मार्ग की प्रारम्भिक अवस्था क्या है?

उत्तर : मानव की उत्क्रांति के मार्ग की प्रारम्भिक अवस्था जड़वाद है।

प्रश्न 102 : मानव की उत्क्रांति का प्रवाह कैसा होता है?

उत्तर : मानव की उत्क्रांति का प्रवाह जड़ से चेतन की ओर होता है।

प्रश्न 103 : मन को सदैव अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रखने का काम कौन करती है?

उत्तर : मन को सदैव अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रखने का काम बुद्धि करती है।

प्रश्न 104 : धर्म का क्या काम है?

उत्तर : बुद्धि को विवेक पथ पर बराबर अग्रसर रखने का काम धर्म करता हैं।

प्रश्न 105 : धर्म को कौनसा पुरुषार्थ माना गया है?

उत्तर : धर्म को आधारभूत पुरुषार्थ माना गया हैं।

प्रश्न 106 : समष्टि के हित में अपनी अस्थियों को हँसते हुये समर्पित करने वाले ऋषि कौन थे?

उत्तर : समष्टि के हित में अपनी अस्थियों को हँसते हुये समर्पित करने वाले ऋषि महर्षि दधीचि थे ।

प्रश्न 107 : जिस प्रकार शरीर, मन ,बुद्धि एवं आत्मा से व्यक्ति बनता है उसी प्रकार राष्ट्र के लिए कौन से तत्व आवश्यक हैं?

उत्तर : जिस प्रकार शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा से व्यक्ति बनता है उसी प्रकार राष्ट्र के लिए तत्व हैं देश (भूमि एवं जन), संकल्प, धर्म तथा आदर्श, जिनके समुच्चय से राष्ट्र बनता है।

प्रश्न 108 : देश किसे कहते हैं?

उत्तर : देश भूमि एवं जन दोनों को मिलाकर बनता है।

प्रश्न 109 : चतुर्विद्य सुख क्या है?

उत्तर : आदर्श एवं परिपूर्ण जीवन के लिए शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा के सुख को चतुर्विद्य सुख कहते हैं।

प्रश्न 110 : चतुर्विद्य पुरुषार्थ क्या है?

उत्तर : चतुर्विद्य सुख प्राप्ति के लिए धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चतुर्विद्य पुरुषार्थ हैं।

प्रश्न 111 : भारतीय संस्कृति में 'सुखस्य मूलं् किम्' (सुख का मूल क्या है) किसको माना गया है?

उत्तर : सुख का मूल धर्म है।

प्रश्न 112 : धर्म का मूल क्या है?

उत्तर : अर्थ धर्म का मूल है, अर्थ के बिना धर्म नहीं टिकता है।

प्रश्न 113 : संकल्प किसे कहते हैं?

उत्तर : सबकी इच्छाशक्ति अर्थात सामूहिक जीवन की इच्छा ही संकल्प है।

प्रश्न 114 : धर्म क्या है ?

उत्तर : नियम या विधान को भारतीय संस्कृति में धर्म कहा गया है।

प्रश्न 115 : आदर्श क्या है?

उत्तर : संस्कृति ही जीवन का आदर्श है।

प्रश्न 116 : संस्कृति क्या है?

उत्तर : संस्कारों द्वारा निर्मित वस्तु संस्कृति है।

प्रश्न 117 : भारतीय संस्कृति में धर्म के प्रमुख लक्षण क्या हैं?

उत्तर : भारतीय संस्कृति में धर्म के 10 प्रमुख लक्षण हैं यथा धैर्य, क्षमा, इंद्रिय दमन, चोरी न करना, पवित्रता, इंद्रियों पर नियंत्रण, बुद्धिमता, ज्ञान, सत्य एवं क्रोध नहीं करना।

प्रश्न 118 : चिति किसे कहते हैं?

उत्तर : व्यक्ति की आत्मा की तरह राष्ट्र की भी आत्मा होती है। राष्ट्र की आत्मा को हमारे शास्त्रकारों ने चिति कहा है। चिति ईश्वर प्रदत्त है। चिति प्रत्येक राष्ट्र की अपनी विशेष प्रकृति होती है, जो ऐतिहासिक एवं भौगोलिक कारणों का परिणाम नहीं अपितु जन्मजात है।

प्रश्न 119 : दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार विराट क्या है?

उत्तर : दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार समाज की शक्ति ही विराट है। विराट के आधार पर प्रजातंत्र सफल होता है। दीनदयाल उपाध्याय विराट को जागृत करने का आह्वान करते हैं।

प्रश्न 120 : दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि से संसार की पूर्णता किन तत्वों से परिलक्षित होती है।

उत्तर : जगत की संपूर्णता की दृष्टि से उपाध्याय चार तत्वों का उल्लेख करते हैं- व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि एवं परमेष्टी ।

प्रश्न 121 : एकात्म अर्थनीति की अवधारणा का प्रतिपादन किसने किया?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने ।

प्रश्न 122 : एकात्म अर्थनीति क्या है?

उत्तर : एकात्म अर्थ नीति पूंजीवाद व साम्यवादी अर्थव्यवस्था के अतिरिक्त तीसरे विकल्प के रूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत आर्थिक नीति है।

प्रश्न 123 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएं क्या हैं?

उत्तर : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा, मकान, पढ़ाई एवं दवाई हैं।

प्रश्न 124 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने आय के वितरण में समता स्थापित करने के लिए न्यूनतम व अधिकतम आय के सम्बन्ध में क्या कहा ?

उत्तर : उन्होंने निम्नतम व अधिकतम आय के बीच 1 : 20 के अनुपात को स्वीकार किया अर्थात् किसी व्यक्ति की कम से कम आय 100/- रुपये हो तो अधिक से अधिक आय 2000.00/- रुपये होनी चाहिए।

प्रश्न 125 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार आर्थिक प्रजातंत्र का मापदंड क्या है?

उत्तर : 'प्रत्येक को काम का अधिकार' आर्थिक प्रजातंत्र का मापदंड है।

प्रश्न 126 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार अर्थव्यवस्था की क्या प्रमुख विशेषता है?

उत्तर : प्रत्येक व्यक्ति को न्यूनतम जीवन स्तर की आश्वस्ति तथा राष्ट्र के सुरक्षा सामर्थ्य की पूर्ण व्यवस्था अर्थ व्यवस्था की मुख्य विशेषता है।

प्रश्न 127 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार 'अदैवमात्रिका कृषि' किसे कहते हैं?

उत्तर : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार जो कृषि इंद्रदेव की कृपा पर निर्भर न रहे, उसे अदैवमात्रिका कृषि कहते हैं।

प्रश्न 128 : पंडित दीनदयाल जी ने शिक्षा व समाज के सम्बन्ध में क्या विचार लिखे?

उत्तर : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार शिक्षा समाज का दायित्व है। शिक्षा सेवाएं नि:शुल्क होनी चाहिये।

प्रश्न 129 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार 'अपरमात्रिक उद्योग नीति' क्या होती है?

उत्तर : अपरमात्रिक उद्योग नीति उत्पादन में स्वावलम्बन से कुछ अधिक उत्पन्न करने वाली उद्योग नीति होती है।

प्रश्न 130 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने औद्योगिक समस्या सुलझाने के लिए क्या सुझाव दिये?

उत्तर : उन्होंने बताया कि देश की औद्योगिक समस्या सुलझाने के लिए उद्योगों का विकेन्द्रीकरण आवश्यक है जो कौटुंबिक भावना पर ही अधिष्ठित होगा, तथा ग्राम हमारे केन्द्र बनने चाहिये।

प्रश्न 131 : चिकित्सा सुविधाओं के सम्बन्ध में पंडित दीनदयाल जी ने क्या कहा?

उत्तर : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार चिकित्सा सुविधा नि:शुल्क होनी चाहिए।

प्रश्न 132 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार 'अर्थ संस्कृति' की अवधारणा क्या है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार अर्थ संस्कृति का सूत्र है- अपरमात्रिक उत्पादन, समान वितरण एवं संयमित उपभोग।

प्रश्न 133 : औद्योगिकरण के लिए कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग तथा बड़े उद्योगों के सम्बन्ध में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार थे ?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय औद्योगिकरण के लिए बड़े उद्योगों, कुटीर उद्योगों तथा ग्रामोद्योगों के बीच समन्वित प्रयास के पक्ष में थे, वे चाहते थे कि ये एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी न बनकर पूरक बने, इस तरह के प्रयास हों।

प्रश्न 134 : उपभोग के सम्बन्ध में पंडित दीनदयाल जी ने क्या कहा है ?

उत्तर : संयमित उपयोग होना चाहिए तथा समाज की ओर से जीवन और विकास के लिए न्यूनतम उपभोग की गारन्टी होनी चाहिए।

प्रश्न 135 : तृतीय विश्व के देशों के विकास के लिए उपाध्याय जी ने किस तरह की अर्थव्यवस्था का सुझाव दिया?

उत्तर : तृतीय विश्व के देशों के विकास के लिए उपाध्याय जी ने ग्रामोन्मुखी लघु उद्योग वाली विकेंद्रित अर्थव्यवस्था का सुझाव दिया।

प्रश्न 136 : देश में बेकारी की समस्या के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय किस को जिम्मेदार मानते है ?

उत्तर : बेकारी की समस्या के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय सदोष शिक्षा पद्धति को जिम्मेदार मानते हैं। उनका विचार है कि जो बेकारी नजर आती है, वह अधिकांश शिक्षित मध्यम वर्ग की बेकारी है जो केवल कलम का ही काम करने के आदि है। शिक्षा व्यवस्था में आज हाथ से काम को कोई स्थान नहीं है तथा पढ़ा-लिखा युवक हाथ के काम से घृणा करता है। अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा के कारण यहाँ का शिक्षित नवयुवक समाज का एक अलग नया वर्ग बन गया है। वे अपने पुश्तैनी व्यवसाय को छोड़

चुके हैं व उससे घृणा करते हैं। वे सरकारी या गैर सरकारी नौकरी की तलाश में इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं, हाथ का काम करने की न तो उनमें योग्यता हैं तथा न ही इच्छा। अत: हमारी शिक्षा को भारतीय बनाया जाए व उसका माध्यम मातृभाषा रखा जाए।

प्रश्न 137 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार आज की परिस्थिति में यदि दो शब्दों का प्रयोग कर अपनी अर्थव्यवस्था की दिशा परिवर्तन को बताना हो तो वे दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार क्या हैं?

उत्तर : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार आज की परिस्थिति में यदि दो शब्दों का प्रयोग कर अपनी अर्थव्यवस्था की दिशा परिवर्तन को बताना हो तो वे दो शब्द 'विकेंद्रीकरण' और 'स्वदेशी' है।

प्रश्न 138 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार 'स्वयं सेवी उत्पादन क्षेत्र' क्या हैं?

उत्तर : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार स्वयं का व्यवसाय/उत्पादन करने वाले निजी व्यक्ति स्वयंसेवी उत्पादन क्षेत्र का हिस्सा हैं।

प्रश्न 139 : अर्थनीति के संबंध में पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा लिखित पुस्तक का नाम बताओ?

उत्तर : अर्थनीति के संबंध में पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा लिखित पुस्तक का नाम 'भारतीय अर्थ नीति : विकास की एक दिशा' है।

प्रश्न 140 : पंडित दीनदयाल के अनुसार पूर्णकालिक नागरिक कुटीर उद्योग कौन से हैं?

उत्तर : पंडित दीनदयाल के अनुसार पूर्णकालिक नागरिक कुटीर उद्योग सुनार, दर्जी, बढ़ई, हाथीदांत बर्तन बनाने वाला, रंगाई, छपाई आदि के काम हैं।

प्रश्न 141 : पंडित दीनदयाल के अनुसार घर-गृहस्थी के चक्र में फंसे हुये किसी सामान्य व्यक्ति से जब हम देश, धर्म, साहित्य की बात करें तब दीनदयाल जी के अनुसार कौन सी लोकोक्ति सुनने को मिलेगी?

उत्तर : भूल गये राग-रंग, भूल गये छकड़ी। तीन चीज याद रहीं, नोन, तेल, लकड़ी।?

प्रश्न 142 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारत की समस्याओं के समाधान के लिये क्या सुझाव दिए?

उत्तर : उन्होंने कहा कि भारत के 'स्व' का साक्षात्कार किये बिना हम अपनी समस्याओं को नहीं सुलझा सकते हैं।

प्रश्न 143 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने श्री विश्वैश्वरैय्या की किन सात बातों को उद्योग नीति के लिए आवश्यक बताया है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने श्री विश्वैश्वरैय्या की जिन सात बातों को उद्योग नीति के लिए आवश्यक बताया - मनुष्य, माल, मुद्रा, मशीन, प्रबंध, लक्ष्य एवं बाजार।

प्रश्न 144 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार 'अर्थायाम' किसे कहते हैं?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार समाज से अर्थ के प्रभाव व अभाव दोनों को मिटाकर समुचित आर्थिक व्यवस्था करने को 'अर्थायाम' कहते हैं।

प्रश्न 145 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार 'अर्थ का प्रभाव' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार 'अर्थ' जब अपने में या उसके द्वारा प्राप्त पदार्थो में या उनसे प्राप्त भोग विलास में आसक्ति उत्पन्न कर देता है तो उसे अर्थ का प्रभाव कहते हैं।

प्रश्न 146 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार आज की स्थिति में केवल दो शब्दों में हमारी अर्थव्यवस्था के लिए प्रभावकारी दिशा बताएं?

उत्तर : विकेन्द्रीकरण एवं स्वदेशी ।

प्रश्न 147 : 'स्वदेशी' के सम्बन्ध में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का विचार क्या था?

उत्तर : उनका विचार था कि हमें 'स्वदेशी' की भावनात्मक कल्पना हृदयंगम करनी होगी। आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वदेशी के राष्ट्रीय अर्थशास्त्र को समझे तथा उसके आधार पर अपने जीवन की नींव रखें। बाजार से वस्तु खरीदते समय वस्तु की सुन्दरता और कीमत पर न जाकर, वह कहाँ बनी है, इस ओर ध्यान जाना चाहिये।

प्रश्न 148 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार खेती के विकास के लिए कैसी बांध परियोजना उपर्युक्त है?

उत्तर : उनके अनुसार खेती के विकास के लिए बड़ी-बड़ी बांध परियोजनाओं की अपेक्षा छोटे-छोटे बांध ही अधिक उपयुक्त हैं।

प्रश्न 149 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने खाद्यानों की कमी का प्रमुख कारण क्या बताया ?

उत्तर : उन्होंने बताया की किसान अधिक धन प्राप्ति के लिए नकदी फसले (Cash Crops) अधिक तथा खाद्यान फसले (Food Crops) कम उगाता है, यह खाद्याभाव का प्रमुख कारण है। अत: उन्होंने दोनों फसलों में संतुलन करते हुए उत्पादन की योजना करने का सुझाव दिया।

प्रश्न 150 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार पूंजीवाद एवं समाजवाद का तीसरा विकल्प क्या हो सकता है?

उत्तर : उनके अनुसार भारतीय संस्कृति के एकात्म मानव दर्शन के अंतर्गत एकात्म अर्थनीति ही ऐसा तीसरा विकल्प बन सकता है।

प्रश्न 151 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार निरंतर कर-वृद्धि एवं वेतन-वृद्धि के स्थान पर सरकार को किस बात पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए?

उत्तर : वस्तुओं के भाव स्थिर रखने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

प्रश्न 152 : मत्स्य न्याय क्या है?

उत्तर : बड़ी मछली द्वारा छोटी मछली को खाये जाने का नियम।

प्रश्न 153 : पूंजीवाद में 'सबलतम ही जिंदा रहेगा' (survival of the fittest) के सिद्धांत के विरुद्ध दीनदयाल जी ने कौन सा सिद्धांत दिया?

उत्तर : पूंजीवाद में 'सबलतम ही जिंदा रहेगा' (survival of the fittest) के सिद्धांत के विरुद्ध दीनदयाल जी ने अंत्योदय का सिद्धांत दिया अर्थात् - जो विकास की दृष्टि से अंत में खड़ा है उसका विकास करना।

प्रश्न 154 : पूंजीवाद के 'अस्तित्व के लिए संघर्ष' के स्थान पर भारतीय संस्कृति में कौन सी अवधारणा है?

उत्तर : पूंजीवाद के 'अस्तित्व के लिए संघर्ष' के स्थान पर भारतीय संस्कृति में 'सहयोग' की अवधारणा है।

प्रश्न 155 : 'दा टू प्लान्स' नामक पुस्तक में पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय की कौन सी परिकल्पना थी ?

उत्तर : 'दा टू प्लान्स' नामक पुस्तक में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की परिकल्पना थी - देश की आर्थिक उन्नति में अधिक से अधिक लोगों का सहभाग होना चाहिए, बड़े उद्योग अपरिहार्य

होने पर ही स्थापित होने चाहिए,आवश्यकतानुसार मशीनीकरण भी किया जाना चाहिए ।

प्रश्न 156 : पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय की अर्थनीति की क्या विशेषता थी?

उत्तर : ग्रामीण क्षेत्र में कृषि आधारित कुटीर उद्योग स्थापित किये जाने चाहिए। गांवों के विकास बिना भारत का विकास अधूरा है।

प्रश्न 157 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार अर्थव्यवस्था के लिए प्राणवायु क्या है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार 'स्वावलंबन एवं स्वदेशी' अर्थव्यवस्था के लिए प्राणवायु हैं।

प्रश्न 158 : हमारी अर्थव्यवस्था की अनेक समस्याओं के मूल कारण दीनदयाल जी ने क्या बताया ?

उत्तर : हमारी अर्थव्यवस्था की अनेक समस्याओं के मूल कारण दीनदयाल जी ने बताया स्वदेशी भावना तथा स्वदेशी पूंजी का अभाव और विदेशी विचारधारा तथा विदेशी पूंजी का अत्यधिक प्रभाव ।

प्रश्न 159 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार विदेशी पूंजी के दुष्परिणाम क्या हैं?

उत्तर : विदेशी पूंजी के साथ हमें विवश होकर विदेशों की उत्पादन प्रणाली भी स्वीकार करनी पड़ती हैं। उक्त उत्पादन प्रणाली में रोजगार का निर्माण कम होता हैं ।

प्रश्न 160 : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार विदेशी सहायता के दुष्परिणाम क्या हैं?

उत्तर : आवश्यकता से अधिक प्राप्त होने वाली विदेशी सहायता के फलस्वरूप हम स्वदेशी एवं स्वावलंबन को भूलते जा रहे हैं।

प्रश्न 161 : ''आर्थिक योजनाओं तथा आर्थिक प्रगति का माप, विकास की सीढ़ी पर पहुंचे हुये सबसे नीचे के स्तर के व्यक्ति के विकास से होगा।'' यह विचार किसका है तथा उस विचार का नाम क्या है?

उत्तर : यह पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'अन्त्योदय' सम्बन्धी विचार है।

प्रश्न 162 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों के आधार पर भारतीय मजदूर संघ की घोषत्रयी क्या है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों के आधार पर भारतीय मजदूर संघ की घोषत्रयी है राष्ट्र का औद्योगीकरण, उद्योगों का श्रमिकीकरण तथा श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण करना।

प्रश्न 163 : सिंचाई परियोजना पर दीनदयाल जी के क्या विचार थे?

उत्तर : पंडित दीनदयाल जी के अनुसार बड़ी परियोजनाएं नहीं बल्कि छोटे-छोटे बांध बनाकर सिंचाई सुविधा बढ़ायेंगे तो लागत कम आयेगी ।

प्रश्न 164 : 'सच्चा हो रुपया' से दीनदयाल जी का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : दीनदयाल जी का विचार था कि अर्थव्यवस्था की नींव जमाने वाला रुपया है अत: वह फिसलने वाला अर्थात् अवमूल्यन वाला नहीं होना चाहिये अर्थात् सच्चा हो रुपया।

प्रश्न 165 : दिसम्बर 1963 में दीनदयाल उपाध्याय ने किसके निमंत्रण पर किस देश की यात्रा की?

उत्तर : दिसम्बर 1963 में दीनदयाल उपाध्याय 'फ्रेंड्स ऑफ इंडिया सोसायटी' के निमंत्रण पर 6 सप्ताह की यात्रा के लिए अमेरिका गये।

प्रश्न 166 : लंदन प्रवास के समय वहाँ के प्रसिद्ध अखबार 'मेनचेस्टर गार्जियन' ने 7 नवम्बर 1963 को दीनदयाल उपाध्याय के बारे में क्या लिखा?

उत्तर : 'युवा भारत इनके राष्ट्रवादी आह्वान के गिर्द एकत्र हो रहा है, श्री उपाध्याय ध्यान देने योग्य व्यक्ति हैं।'

प्रश्न 167 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की अमेरिका की यात्रा के साथ और कहां-कहां गये?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी सन् 1963 में अमेरिका गये; वहां से इंग्लैण्ड, पश्चिमी जर्मनी और पूर्वी अफ्रीका भी गये।

प्रश्न 168 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी जब विदेश गये तब उनका पहनावा क्या था?

उत्तर : पंडित दीनदयाल जी का पहनावा धोती व कुर्ता था।

प्रश्न 169 : पंडित दीनदयाल के अनुसार राष्ट्र की स्वतन्त्रता से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : उन्होंने बताया कि 15 अगस्त 1947 को हमने एक लड़ाई जीती। परन्तु हमें आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक स्वतन्त्रता चाहिए।

प्रश्न 170 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार संस्कृति क्या है ?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार संस्कृति शरीर में प्राण की भांति राष्ट्र जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुभव की जा सकती है। संस्कृति कभी भी गति शून्य नहीं होती। सांस्कृतिक दृष्टिकोण साहित्य, कला, दर्शन, स्मृति, शास्त्र तथा सामाजिक इतिहास सब में व्यक्त होता रहता है।

प्रश्न 171 : अल्पसंख्यकों के बारे में दीनदयाल जी उपाध्याय के विचार क्या थे?

उत्तर : अल्पसंख्यकों के प्रति सहिष्णुता तथा उनके साथ पूर्णत: भेदभाव रहित व्यवहार प्रजातन्त्र का अनिवार्य अंग है। धर्म के आधार पर अल्पसंख्यक तथा बहुसंख्यक का भेदभाव करना स्वीकार नहीं हो सकता ।

प्रश्न 172 : देश विभाजन के समय पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने हिन्दुओं व मुसलमानों को क्या संदेश दिया ?

उत्तर : उन्होंने कहा कि देश विभाजन के समय भारतीय जनता को चाहे वह हिन्दु हो चाहे मुसलमान, भीषण मुसीबतों का सामना करना पडा है। अत: हिन्दु-मुसलमान की भलाई एक ही बात में हैं कि दोनों अपने संयुक्त प्रयास से 'अखण्ड भारत' का निमार्ण करें।

प्रश्न 173 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार प्रशासन का स्वरूप क्या है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार स्वराज्य मिलने के बाद विशेषत: स्वराज्य का विचार अधिक जागरूकता तथा गहराई में जाकर किया जाना चाहिए । दक्ष कार्यक्षमता तथा लोकानुरूप प्रशासन सरकार की प्रथम आवश्यकता है।

प्रश्न 174 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार राजनीतिक प्रजातंत्र का प्रमुख मापदंड क्या है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार राजनीतिक प्रजातंत्र का प्रमुख मापदंड 'प्रत्येक को वोट का अधिकार' है।

प्रश्न 175 : दीनदयाल जी द्वारा बस से गिरने पर लगी चोटों के लिए उन्होंने क्या कहा?

उत्तर : जम्मू कश्मीर सत्याग्रह के समय बस से गिरने पर गम्भीर चोटें आईं शुभचिंतकों द्वारा कुशल पूछने पर उत्तर दिया ''क्या ये चोटे उनसे अधिक हैं जो सत्याग्रहियों को पुलिस के डंडों से मिलती हैं''।

प्रश्न 176 : कश्मीर महाराजा हरीसिंह जी के विषय में दीनदयाल जी ने क्या कहा?

उत्तर : दीनदयाल जी ने कहा कि महाराजा हरीसिंह को भारतीय नेतृत्व द्वारा प्रस्तुत शर्तें स्वीकार नहीं थी कि सत्ता 'शेख अब्दुल्ला को सोंप दी जाये'।

प्रश्न 177 : किस बात को दीनदयाल जी ने संविधान की आत्मा को पांव से रौंदना बताया?

उत्तर : शेख अब्दुल्ला की अलग राज्य का ध्वज व अपने लिए प्रधान-मंत्री पद की मांग को जब केन्द्र सरकार द्वारा स्वीकार कर लिया तब दीनदयाल जी ने इसे संविधान की आत्मा को पांव से रौंदना बताया।

प्रश्न 178 : कश्मीर को लेकर दीनदयाल जी ने क्या भविष्यवाणी की थी?

उत्तर : दीनदयाल जी ने 1952 में भविष्यवाणी की थी कि कश्मीर में अलगाववाद बढ़ेगा और पाकिस्तान का प्रतिरूप बनेगा । यह भविष्यवाणी सटीक साबित हुई।

प्रश्न 179 : कश्मीर के लिए दीनदयाल जी ने क्या मांग की थी?

उत्तर : 1952 में दीनदयाल जी ने मांग की थी कि 1. अन्य राज्यों की तरह कश्मीर का भी भारत में पूरी तरह विलय हो । 2. पाकिस्तान द्वारा हथियाए गये कश्मीर को खाली कराया जाए। 3. संयुक्त राष्ट्र संघ में भेजे कश्मीर विषय के सारे मामले वापस लिए जाएं।

प्रश्न 180 : भारत और पाकिस्तान के बीच बातचीत से समस्या का समाधान निकालने और भारत और पाकिस्तान का एकीकरण कर एक महासंघ बनाने के लिए 12 अप्रैल, 1964 को एक संयुक्त वक्तव्य किन्होंने जारी किया था?

उत्तर : पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय एवं डॉ. राम मनोहर जी लोहिया ने।

प्रश्न 181 : पंडित दीनदयाल जी के जनसंघ के महामंत्री बनते समय 1953 में भारतीय जनसंघ द्वारा चलाए गये कश्मीर आंदोलन के प्रसिद्ध तीन नारे क्या थे?

उत्तर : कश्मीर आंदोलन के प्रसिद्ध तीन नारे थे -
एक देश में दो विधान नहीं चलेंगे।
एक देश में दो प्रधान नहीं चलेंगे।
एक देश में दो निशान नहीं चलेंगे।

प्रश्न 182 : जौनपुर के उपचुनाव निर्वाचन क्षेत्र में जब कांग्रेस ने प्रत्याशी राजपूतवाद का सहारा लिया तथा जनसंघ के कार्यकर्ताओं ने उपाध्याय जी को ब्राह्मणवाद का सहारा लेने का आग्रह किया तो दीनदयाल जी ने क्या जवाब दिया?

उत्तर : दीनदयाल जी ने जवाब दिया यदि इस प्रकार चुनाव जीतने की कोशिश की तो मैं चुनावों से हट जाउंगा।

प्रश्न 183 : मुक्ति के संबन्ध में दीनदयाल उपाध्याय जी के क्या विचार थे?

उत्तर : मुक्ति व्यक्तिगत नहीं होती समष्टिगत होती है।

प्रश्न 184 : जीवन ध्येय बिन्दु क्या है?

उत्तर : ध्येय की ओर जाने के रास्ते अलग-अलग हो सकते हैं परंतु राष्ट्र हमारा है, राष्ट्र देवता मंदिर की ओर जाना है, बाकी सब बातें उस ध्येय साधना के लिए अपने आप सुसंगत हो जाएंगी।

प्रश्न 185 : धर्म क्या है?

उत्तर : धर्म का अभिप्राय रिलीजन नहीं है। धर्म संघर्ष में नहीं समझदारी में होता है।

प्रश्न 186 : अनुशासन क्या है?

उत्तर : अन्त:करण की व्यवस्थितता अनुशासन का मानसिक स्वरूप है। हमारे यहां अनुशासन शब्द में व्यक्ति स्वातंत्र्य व्यक्ति का सूत्रबद्ध जीवन और समाधि में उसका विलिनीकरण दोनों का अंतर्भाव है।

प्रश्न 187 : राष्ट्र कब मरता है ?

उत्तर : जब किसी राष्ट्र की संस्कृति नष्ट हो जाती है तो वह मर जाता है, यूनान, मिस्र एवं रोम अपनी संस्कृति के नष्ट होने से मर गए।

प्रश्न 188 : दीनदयाल जी के विद्यार्थी जीवन के साथी कौन थे जिन्होंने दीनदयाल जी के विचारों के आधार पर ग्रामोत्थान कार्यक्रम चलाए?

उत्तर : भारत रत्न स्व. श्री नानाजी देशमुख।

प्रश्न 189 : नानाजी देशमुख ने दीनदयाल जी की सहज ईमानदारी की घटना क्या बतायी?

उत्तर : उन्होंने बताया कि एक दिन वह दीनदयाल जी के साथ बाजार सब्जी खरीदने गये। दो पैसे की सब्जी खरीदी। घर पहुँचकर दीनदयाल जी एकाएक रुक गये, उनका एक हाथ जेब में था, पूछने पर बोले मेरी जेब में चार पैसे थे, उसमें एक पैसा खोटा था, वह पैसा मैं सब्जी वाली को दे आया, वह क्या कह रही होगी। वह वापिस नानाजी के पास गये तथा सब्जी वाली बुढ़िया से खोटा पैसा ढूंढ़ कर निकाला तथा अच्छा पैसा देकर उनके चेहरे पर संतोष का भाव उभरा। बुढ़िया ने कहा, बेटा तुम कितने अच्छे हो, भगवान तुम्हारा भला करे।

प्रश्न 190 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अपने मामा को 10 मार्च, 1944 को जो पत्र लिखा उसमें मार्मिक बात क्या थी?

उत्तर : ''उन्होंने लिखा जिस समाज और धर्म की रक्षा के लिए राम ने वनवास सहा, कृष्ण ने अनेकों कष्ट उठाये, राणा प्रताप जंगल-जंगल मारे फिरे, शिवाजी ने सर्वस्व अर्पण कर दिया, गुरु गोविन्द सिंह के छोटे-छोटे बच्चे जीते जी किले की दीवार में चुना दिये गये, क्या उनके खातिर हम अपनी जीवन की आकांक्षाओं का, झूठी आकांक्षाओं का त्याग भी नहीं कर सकते''।

प्रश्न 191 : दीनदयाल उपाध्याय ने अपने लेखन के लिए किन ऐतिहासिक पात्रों का चयन किया?

उत्तर : दीनदयाल उपाध्याय ने अपने लेखन के लिए भगवान कृष्ण, शंकराचार्य, तुलसीदास, शिवाजी व लोकमान्य तिलक जैसे ऐतिहासिक पात्रों का चयन किया ।

प्रश्न 192 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कौन से दो आदर्शो की चर्चा की?

उत्तर : प्रथम आदर्श जिसकी रचना हमारे ऋषियों, विचारकों, तत्वज्ञों ने की तथा उसकी रक्षा हमारे वीरों, महात्माओं व बहिनों ने अपनी बलि देकर की। दूसरा पाश्चात्य आदर्श जो हमारी 250 वर्षो की लम्बी दासता का प्रतीक है जिसे बलपूर्वक पश्चिम द्वारा हमारे उपर लादा गया जो हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति नहीं, अभिव्यक्ति में रोड़ा है।

प्रश्न 193 : दीनदयाल उपाध्याय द्वारा लिखित निबंध 'राष्ट्रजीवन की समस्याएँ' किस वर्ग के सम्बन्ध में था?

उत्तर : यह निबन्ध राजनीतिक दलों के विषय में था।

प्रश्न 194 : इस लेख में दीनदयाल उपाध्याय ने राजनीतिक दलों को कितने भागों में विभाजित किया?

उत्तर : इस लेख में दीनदयाल उपाध्याय ने राजनीतिक दलों को चार भागों में विभाजित किया - (1) अर्थवादी राजनीतिक दल (2) राजनीतिवादी राजनीतिक दल (3) मतवादी राजनीतिक दल (4) संस्कृतिवादी राजनीतिक दल।

प्रश्न 195 : भारत के लोकतंत्र के इतिहास में विरोध पक्ष को विकसित करने में किन दो महापुरुषों का निर्णायक योगदान है?

उत्तर : डॉ. राममनोहर लोहिया एवं दीनदयाल उपाध्याय।

प्रश्न 196 : इस्लाम को राष्ट्रीयता का आधार मानकर पाकिस्तान की कश्मीर नीति के सम्बन्ध में पं दीनदयाल उपाध्याय ने क्या कहा?

उत्तर : यदि आज कश्मीर पर हम केवल इस कारण पाकिस्तान का अधिकार स्वीकार करने की बात की जाती है कि वहाँ मुसलमानों का बहुमत है तो हम अपनी एक राष्ट्रीयता की नींव पर कुठाराघात करेंगे। हमारे द्वारा जनता की राय जानने की घोषणा करना सैद्धांतिक दृष्टि से गलत था। दुर्भाग्यवश पाकिस्तान आज उसी को पकड़े बैठा है।

प्रश्न 197 : विदेश नीति के सम्बन्ध में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कौन से व्यावहारिक सूत्र बताये?

उत्तर : विदेश नीति के सम्बन्ध में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने व्यावहारिक सूत्र बताए।

1. विदेश नीति का नियामक सिद्धांत 'राष्ट्रहित' है।
2. भारतीय परिस्थिति में पाकिस्तान व चीन 'प्राकृत शत्रु' है।

3. राष्ट्रहितों में सहयोगी मित्र तथा असहयोगी शत्रु होते हैं।

4. निर्गुट के साथ ही भारतीय नेतृत्व में 'नवीन मोर्चे' का गठन होना चाहिये।

5. प्रतिरक्षा की पूरक परराष्ट्र नीति होनी चाहिये।

प्रश्न 198 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय की सुरक्षा नीति का ध्येय वाक्य क्या था?

उत्तर : उनका मत था 'राष्ट्र का सैनिकीकरण तथा सेना का आधुनिकीकरण करों'।

प्रश्न 199 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने युद्ध प्रयासों की सफलता की कुंजी क्या बतायी?

उत्तर : उपाध्याय मानते थे कि 'युद्धविरामों' व 'समझोतों' की नीतियों ने देश की सुरक्षा को अनिश्चित व शत्रुओं को उत्साहित किया हैं। अत: 'युद्ध! अंतिम विजय तक युद्ध!! यही विचार प्रत्येक भारतीय के मन में हो और इसी दृष्टि से देश की सभी नीतियां बनें।

प्रश्न 200 : सुरक्षा नीति, अर्थनीति व स्वराष्ट्र नीति के सम्बन्ध में दीनदयाल उपाध्याय के क्या विचार थे?

उत्तर : वे स्वराष्ट्र नीति व अर्थनीति को सुरक्षा नीति का पूरक बनाने के हिमायती थे।

प्रश्न 201 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अलग जनपदीय स्वराज्य क्या है?

उत्तर : एकात्म शासन प्रणाली ही जनपदीय स्वराज्य है जो गांधी के ग्राम स्वराज्य के निकटवर्ती विचार है।

प्रश्न 202 : पंडित नेहरू जी के तीव्र आलोचक होते हुए भी उनकी विदेश यात्रा के समय दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि क्या रहती थी?

उत्तर : वे अपने दल का पूर्ण समर्थन नेहरू की विदेश यात्रा के समय व्यक्त करने की घोषणा करते थे।

प्रश्न 203 : आचार्य कृपलानी द्वारा दीनदयाल उपाध्याय के निधन के समय क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की गई?

उत्तर : आचार्य कृपलानी ने कहा 'वे मातृभूमि की एकता व अखण्डता के पुजारी थे तथा जनसंघ में रहते हुए भी उन्होंने सदैव देशहित को दलीय हितों से ऊंचा स्थान दिया।

प्रश्न 204 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय पर डाक टिकट कब जारी हुआ?

उत्तर : दीनदयाल उपाध्याय पर प्रथम डाक टिकट 1978 में जारी हुआ।

प्रश्न 205 : जिस रेलवे स्टेशन 'मुगलसराय जंक्शन' पर उनकी मृत्यु हुई उसका आजकल क्या नाम है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन।

प्रश्न 206 : मृत्यु के समय पंडित दीनदयाल उपाध्याय की आयु कितनी थी?

उत्तर : 51 वर्ष।

प्रश्न 207 : दीनदयाल जी का अंतिम बौद्धिक संघ में कब हुआ?

उत्तर : 4 फरवरी 1968 उत्तर प्रदेश के बोली में उनका अंतिम बौद्धिक हुआ।

प्रश्न 208 : दीनदयाल जी का निधन कब हुआ?

उत्तर : 11 फरवरी 1968 को मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर उनका मृत शरीर पड़ा मिला।

प्रश्न 209 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक राजस्थान में कहां है?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक राजस्थान में धानक्या, जयपुर में है।

प्रश्न 210 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक, धानक्या में क्या-क्या दर्शाया गया है?

उत्तर : उक्त स्मारक में पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय के जीवन के विभिन्न प्रसंगों को 3-डी, 2-डी व प्रिंट मीडिया में प्रदर्शित किया गया है।

प्रश्न 211 : पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक, धानक्या, जयपुर का निर्माण किसने तथा कितनी लागत से करवाया?

उत्तर : पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक का निर्माण राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण ने राजस्थान सरकार से वित्तीय व प्रशासनिक स्वीकृति प्राप्त कर लगभग दस करोड़ रुपये की लागत से बनवाया।

प्रश्न 212 : स्मारक के निर्माण के समय धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण के अध्यक्ष एवं राजस्थान के मुख्यमंत्री कौन थे?

उत्तर : स्मारक के निर्माण के समय धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री औंकार सिंह लखावत थे एवं मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे थीं।

प्रश्न 213 : दीनदयाल जी निधन के समय किस ट्रेन में यात्रा कर रहे थे?

उत्तर : दीनदयाल जी पठानकोट-स्यालदाह एक्सप्रेस से यात्रा कर रहे थे। गाड़ी शाम 7 बजे लखनऊ से रवाना हुई थी ।

q q q